

शीर्षक - मने सिर झुकाया है

मैने सिर झुकाया है ,
भय दवाब करवाहट से नहीं लेकिन झुकाया है
आंखे धाप कर निचे की ओर देख
उसकी उपस्तिथि से शर्मा कर।

मैने सिर झुकाया ,
उसकी हर उल जुलूल बेफिज़ूल बात पर
उसके जोर देने पर।

झुकाया है सिर मैने
उसके प्रेम के अनुवादन पर चर्चा पर ,
उसके आँखों के स्पर्श से ललाहित होकर।

सिर झुकाया मैने,
उसके आलोचना और शब्दों में घटे
प्रेम को देख उससे विमुख होने की
आकांक्षा पर।

आज भी झुकी है आंखे और सिर
ये कविता पढ़ते हुए , सब्दो के लिए नहीं
किन्तु पश्चाताप के बोझ से।

